Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on **“_वियना कांग्रेस के उद्देश्य एवं कार्यों की समीक्षा करें।**"(Note -2)

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

वियना कांग्रेस के उद्देश्य एवं कार्यों की समीक्षा करें।

कांग्रेस की समस्या-

वियना कांग्रस के सामने अनेक प्रकार की समस्याएँ थी। सर्व प्रथम नेपोलियन के युद्धों के चलते यूरोपीय मानचित्र में काफी परिवर्तन आ गया था। वियना कांग्रेस के समक्ष इन राज्यों की पुर्णस्थापना का प्रश्न था दूसरी समस्या क्रांतिकारी भावना का दमन- करना था। चर्च का प्रश्न भी बहुत बड़ी समस्या थी। वियना के सदस्य चर्च के प्रभाव को फिर से स्थापित करना चाहते थे। चौथी समस्या युद्ध की संभावना को समाप्त करना था ताकि पुन: नेपोलियन जैसा कोई शक्तिशाली व्यक्ति पैदा नहीं हो सके। विजित राष्ट्रों को पुरस्कृत करना भी एक अन्य समस्या थी।

वियना कांग्रेस के सिद्धांत एवं उद्देश्य-

उपर्युक्त समस्याओं के समाधान के लिए वियना कांग्रेस के कुछ सिद्धांत थे जो इस प्रकार है।

शक्ति संतुलन का सिद्धांत-

इसका प्रमुख सिद्धांत शक्ति संतुलन था अर्थात कोई देश इतना शक्तिशाली न बन पाए की वह दूसरों के लिए खतरनाक बन जाए इस लिए फ्रांस पर प्रतिबंध लगाने के लिए हौलेंड स्वीटजरलैंड, बबेरिया तथा सेर्डिनया का विस्तार किया गया। फ्रांस चारों तरफ से मजबूत राज्यों से घिर गया। इसी तरह जर्मनी को इतना शक्तिशाली बनाया गया कि प्रशा सर नहीं उठा सके। इटली में आस्ट्रिया की स्थापित की गई इस प्रकार शक्ति संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया। ताकि संपूर्ण यूरोप में शक्ति शांति बनी रहे।

वैधता का सिद्धांत-

इस सिद्धांत के आधार पर 1789 के यूरोपीय मानचित्र को आदार स्वीकार कर विभिन्न यूरोपीय राज्यों की सीमा-निर्धारण का प्रयत्न किया गया। हालैंड, पुर्तेगाल, नेपल्स,

तथा इटली आदि राज्य अनेक पुराने राजवंश को लौटा दिया गया।

क्षति- पूर्ति का सिद्धांत-

इस सिद्धांत के अनुसार जिन देशों को नेपोलियन ने नष्ट किया था और जिन्होंने उसके खिलाफ संघर्ष किया था। उनकी क्षति- पूर्ति करना और उन्हें पुरस्कृत करना स्वीकार किया गया। जिन देशों ने नेपोलियन का साथ दिया था। उन्हें दंड दिया गया गया था। फ्रांस के विरुद्ध सीमांत राज्यों को शक्तिशाली बनाना- इसका चौथा सिद्धांत फ्रांस के विरुद्ध सीमांत राज्यों को शक्तिशाली बनाया जाए ताकि फ्रांस अंतर्राष्ट्रीय शक्ति को भंग नहीं कर सके। उपर्युक्त सिद्धान्तों के अतिरिक्त इसके अन्य सिद्धांत भी थे। शांति- समझौता को बरकरार रखने के लिए इसके पीछे भी शक्ति होनी चाहिए। अत: इंगलैंड, आस्ट्रिया, रुस और प्रशा ने चतुसुत्रीय संधि की इसी सिद्धांत के फलस्वरुप यूरोपीय व्यवस्था की उत्पत्ति हुई।

References: Internet & Competitive books.